Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for pg 1,cc3,unit 1

Topic :–हर्षवर्द्धन के सैनिक अभियान (Military Campaigns of Harshvardhana)

हर्षवर्द्धन के शासक बनने के समय तक अनेक नई शक्तियों का उदय हो चुका था। मालवा और गौड़ के राज्य उसके प्रबल राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी थे। इसके अतिरिक्त साम्राज्य विस्तार भी आवश्यक था। अतः शासक बनते ही हर्षवर्द्धन का ध्यान इस ओर गया। तत्कालीन स्रोतों से विदित होता है कि अपने शत्रुओं देवगुप्त और शशांक के विरुद्ध अभियान के अतिरिक्त हर्षवर्द्धन ने अन्य सैनिक अभियान भी किए तथा 'दिग्विजय' की नीति अपनाई; परंतु हर्षवर्द्धन के सैनिक अभियानों का क्रमबद्ध विवरण और उनकी तिथि बहुत स्पष्ट नहीं है। कनौज से देवगुप्त और शशांक की सत्ता समाप्त कर हर्षवर्द्धन दिग्विजय के लिए निकला। ह्वेनसांग इस अभियान का वर्णन निम्नलिखित शब्दों में करता है, "पूर्व की ओर बढ़कर उसने उन राज्यों पर आक्रमण किया, जिन्होंने उसकी अधीनता स्वीकार नहीं की थी, छह वर्षों तक, जबतक उसने पाँच भारतों के साथ पूर्णतः युद्ध नहीं कर लिया, वह निरंतर लड़ता रहा। चीनी यात्री आगे कहता है कि उसने अपने शासित क्षेत्र को बढ़ाकर सेना बढ़ाई, तथा तीस वर्षों तक शांतिपूर्वक शासन किया। 'पाँच भारत' के अंतर्गत श्रावस्ती (पूर्वी पंजाब, काश्मीर), कान्यकुब्ज (उत्तर प्रदेश,विंध्य और बिहार), गौड़ (बंगाल), मिथिला (पूर्वी बिहार, बंगाल और आसाम के कुछ भाग) और उत्कल (उड़ीसा) को रखा गया है। कुछ चीनी स्रोतों में 'पाँच भारत' के स्थान पर 'पाँब गौड़' का उल्लेख हुआ है। शी-यू-की का यह अनुवाद वार्टस (Watters) ने किया है। इस ग्रंथ के दूसरे अनुवादक बील ने चीनी ग्रंथ के इस प्रकरण का दूसरा ही अनुवाद किया है। बील (Beal) के अनुसार "वह पूर्व से पश्चिम की ओर उन सभी को जीतता गया जो आज्ञापालक नहीं थे। छह वर्षों के बाद उसने पंच भारतों को जीत लिया। इस प्रकार अपने शासित क्षेत्रों को बढ़ाकर उसने अपनी सेना बढ़ाई। तीस वर्षों के बाद उसने हथियार रखे और सभी जगह शांतिपूर्वक शासन किया।"इन दोनों विवरणों में विरोधाभास प्रतीत होता है। वार्टस के कथन का आरंभिक भाग और बील के कथन का अंतिम भाग ही हर्षवर्द्धन की ज्ञात गतिविधियों से मेल खाता प्रतीत होता है। चीनी यात्री के विवरण के आधार पर हर्षवर्द्धन के दिग्विजय की निम्नलिखित रूपरेखा प्रस्तुत की जा सकती है

1. **पूर्वी अभियान** - शासक बनने के बाद कन्नौज में अपनी स्थिति सुदृढ़कर हर्षवर्द्धन पूर्वी अभियान पर निकला। इसका मुख्य उद्देश्य शशांक पर विजय प्राप्त करना था। हर्षचरित और आर्यमंजुश्रीमूलकल्प से विदित होता है कि हर्ष ने शोक पर विजय प्राप्त की तथा मार्ग में पड़नेवाले अन्य राज्यों को अपना अधीनस्थ बनाया। चीनी यात्री कन्नौज और गौड़ के मध्य पड़ने

वाले बिहार बंगाल के अनेक स्थानों का उल्लेख करता है जहाँ वह गया था, लेकिन कपिलवस्तु और मगध के अतिरिक्त अन्य राज्यों या स्थानों की राजनीतिक स्थिति के संबंध में वह मौन है। इसका अर्थ यह लगाया गया है कि ये सभी स्थान हर्ष के अधीन थे। कनौज और बंगाल के मध्य पड़नेवाले राज्यों (स्थानों) की संख्या 17 थी। ये स्थान थे। 1. अयोध्या, 2. हयमुख, 3. प्रयाग, 4. कौशांबी, 5. विशोक, 6. आवस्ती, 7. कपिलवस्तु, 8, रामग्राम, 9. कुशीनगर, 10, वाराणसी, 11. चंचु, 12. वैशाली, 13. वृजि, 14. मगध, 15. हिरण्यपर्वत . 16. चम्पा तथा 17. कजांगल। पुण्ड्रवर्द्धन के निकट शशांक से युद्ध हुआ जिसमें वह पराजित हुआ; परंतु हर्षवर्द्धन गौड़ पर अधिकार नहीं कर सका। 619-20 ई में शशांक की मृत्यु के बाद ही हर्षवर्द्धन गौड़ पर अधिकार कर सका। पूर्व में कामरूप पर हर्षवर्द्धन का प्रभाव पहले ही स्थापित हो चुका था। भास्करवर्मन ने हर्ष की अधीनता स्वीकार कर ली थी।

पूर्वी अभियान के परिणामस्वरूप हर्षवर्द्धन को अन्य राज्यों की मित्रता भी प्राप्त हुई। मगध के शासक पूर्णवर्मन ने-जिसने मगध पर अधिकार कर लिया था (वह मौखरी वंश का प्रतीत होता है) - हर्ष की अधीनता स्वीकार कर ली। हर्ष ने उसे मगध का शासक बना रहने दिया। बाद में माधवगुप्त हर्ष का अधीनस्थ राजा बना। मगध पर इस प्रकार हर्ष का आधिपत्य स्थापित हो गया। चीनी स्रोतों में हर्ष को मगधराज भी कहा गया है। मगध के साथ नालंदा पर भी हर्ष का आधिपत्य स्थापित हुआ। वहाँ से उसकी एक मुहर मिली है। हर्ष ने नालंदा में एक कसि का विहार भी बनवाया तथा महाविहार को गाँव दान में दिए। उपलब्ध प्रमाणों से अन्य स्थानों पर भी हर्ष के आधिपत्य को पुष्टि होती है। भिट्टीरा (फैजाबाद) से प्राप्त शिलादित्य के सिकों के आधार पर अयोध्या पर उसका अधिकार माना गया है। प्रयाग में तो हर्ष पंचवर्षीय महामोक्ष परिषद का आयोजन करता ही था। स्त्रावली में कौशांबी भूक्ति का भी उल्लेख है। श्रावस्ती भूक्ति का उल्लेख मधुबन अभिलेख में मिलता है। कजांगल में हर्ष ने दरबार किया तथा हिरण्यपर्वत में दो विहारों का निर्माण किया। इस प्रकार कमीज से पूर्व में बंगाल तक के सभी क्षेत्रों पर हर्षवर्द्धन का आधिपत्य स्थापित हो गया।

2. **पश्चिमी अभियान-** पूर्वी अभियान के पश्चात हर्ष ने कन्नौज के पश्चिम के राज्यों की ओर अपना ध्यान दिया। कनौज के पश्चिम सतलज और गंगा के मध्यवती क्षेत्रों पर बर्द्धनों का अधिकार था, परंतु देवगुप्त और शशांक के आक्रमणों ने बर्द्धनों की सत्ता कमजोर कर दी थी। अतः इस क्षेत्र में हर्ष को पुनः अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना पड़ा। चीनी यात्री इस क्षेत्र के विभिन्न स्थानों का भी नाम देता है। ये स्थान निम्नलिखित थे- 1. कपिथा (संकिशा), 2. अतरे-जीखेड़ा, 3. अहिच्छत्रा, 4. गोवीसान (काशीपुर), 5. ब्रह्मपुर (हरिद्वार के निकट), 6. मतीपुर (मेढावर), 7. सुन (शुग), 8. स्थानीश्वर 9. मथुरा 10. पारियात्र (जयपुर के निकट), 11. शतदु(सीद), 12. कुलुट (कल्लु), 13. जालंधर, 14. चीनधुक्ति (पूर्वी पंजाब), तथा 15. टक्क (पश्चिमी पंजाब)। हेनसांग इनमें से सिर्फ मतिपुर, मथुरा, परियात्र, जालंधर और ब्रह्मपुर की राजनीतिक स्थिति का स्पष्ट उल्लेख करता है। ये राज्य हर्षवर्द्धन के अधीनस्थ थे। अन्य राज्यों (क्षेत्रों) पर हर्षवर्द्धन का सीधा नियंत्रण प्रतीत होता है। इस प्रकार 6 वर्षों के अंदर (612 ई०)

हर्षवर्द्धन ने पूर्व में उत्तर-पश्चिमी बंगाल में पुण्ड्रवर्धन से लेकर पश्चिम में व्यास तक अपना प्रभाव क्षेत्र स्थापित कर लिया। अब उसने अन्य विजयों की ओर अपना ध्यान दिया।

3. **सिंध की विजय**-सिंध राज्य की सीमा हर्ष के राज्य से सटी हुई थी। अतः हर्ष ने इस पर विजय की योजना बनायी। वाणभट्ट के विवरण के अनुसार, हर्षवर्द्धन ने सिंध के राजा का मान-मर्दन किया तथा वहाँ से धन बसूला। इससे प्रतीत होता है कि हर्ष ने वर्द्धनवंश के पुराने शत्रु सिंध के राजा पर विजय प्राप्त की; परंतु चीनी यात्री के विवरण से इसकी पुष्टि नहीं होती। हेनसांग के अनुसार सिंध एक स्वतंत्र और शक्तिशाली राज्य था। अतः, हर्ष द्वारा सिंध की विजय निश्चित नहीं है।

4. **बंगाल**-620 ई में शशांक की मृत्यु के पश्चात हर्षवर्द्धन ने पूर्व में पुनः अभियान किया। इस बार उसने बंगाल के एक बड़े क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। समतट, ताम्रलिप्ति, कर्णसुवर्ण और पण्ड्रवर्धन पर उसका अधिकार स्थापित हो गया। बंगाल की विजय के पश्चात ही हर्ष ने बर्द्धमानकोटि (दिनाजपुर) से बांसखेड़ा अभिलेख (दानपत्र) जारी किया था।

5. **वल्लभी के साथ युद्ध**-सातवीं शताब्दी में वल्लभी (गुजरात) एक शक्तिशाली राज्य था। इसका अधिकार पश्चिमी मालवा पर भी था। हर्ष के राज्य की सीमा इससे सटी हुई थी। अतः, हर्ष अपने राज्य की सीमा पर एक शक्तिशाली राज्य को स्वतंत्र छोड़ना नहीं चाहता था। वल्लभी पर नियंत्रण स्थापित होने से गुर्जर भी उसके प्रभाव में आ जाते तथा उसे चालुक्यों से निबटने में भी सहायता मिलती। अतः, हर्षवर्द्धन ने वल्लभी पर आक्रमण करने की योजना जनाई। गुर्जरनरेश दद्दा के नौसारी अभिलेख से ज्ञात होता है कि बल्लभी नरेश ध्रुवसेन द्वितीय हर्ष से "राजित होकर गुर्जरों के पास सहायता के लिए पहुँचा। बाद में उसने हर्ष की अधीनता स्वीकार कर ली। वह हर्ष के सामंत के रूप में शासन करने लगा। हर्ष ने अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ कर दिया। वल्लभी पर हर्ष की विजय संभवतः 630 ई० में हुई। कुछ विद्वानों की धारणा है कि हर्ष ने वल्लभी पर विजय प्राप्त नहीं की।

6.**हर्ष और पुलकेशिन द्वितीय**-वल्लभी के साथ युद्ध ने हर्ष और चालुक्य-सम्राट पुलकेशिन के बीच युद्ध अनिवार्य कर दिया। दोनों ही महत्त्वाकांक्षी शासक थे और दोनों एक-दूसरे पर अपना प्रभाव जमाना चाहते थे। उनके राज्य की सीमाएँ भी निकट थीं। अतः, युद्ध अवश्यंभावी हो गया। ह्वेनसांग के विवरण और ऐहोल-अभिलेख में इस युद्ध का वर्णन है। पुलकेशिन के वंशजों के निरपन, करनूल और तोगरचेदी अभिलेख में भी इसका वर्णन है। यह युद्ध 630 ई के पश्चात हुआ। इसमें हर्ष की पराजय हुई। अभिलेख के अनुसार, "जिसके चरणकमलों पर अपरिमित समृद्धि से युक्त सामंतों की सेना नतमस्तक होती थी, उस हर्ष का हदय युद्ध में मारे गए हाथियों के वीभत्स दृश्य को देखकर विगलित हो गया।"" ह्वेनसांग भी कहता है कि हर्ष पुलकेशिन पर विजय प्राप्त नहीं कर सका। इस युद्ध के पश्चात नर्मदा नदी दोनों राज्यों की सीमारेखा निर्धारित हुई।

7. **मध्य भारत-** हेनसांग के विवरण के अनुसार हर्षवर्द्धन ने जेजाकमुक्ति (बुंदेलखंड). महेश्वरपुर (ग्वालियर), गुर्जर और उज्जैन पर भी अपना अधिकार स्थापित किया। कुछ विद्वानों का यह भी मानना

है कि पूर्वी मार्ग से हर्ष ने दक्षिण के अंदर प्रवेश किया; परंतु इस धारणा की पुष्टि के लिए स्पष्ट प्रमाण नहीं है।

8. **काश्मीर और नेपाल** - यद्यपि हर्ष द्वारा काश्मीर और नेपाल की विजय भी संदिग्ध है, तथापि वाणभट्ट और हेनसांग दोनों इन प्रदेशों पर हर्ष का आधिपत्य मानते हैं। दोनों ही हिमप्रदेश पर हर्ष का अधिकार स्वीकार करते हैं। ह्वेनसांग के अनुसार हर्ष ने काश्मीर से गौतम बुद्ध का दाँत लाकर कनौज के निकट एक संघाराम में स्थापित किया। नेपाल में हर्ष-संत (606) के प्रचलन (अंशुवर्मन और उसके उत्तराधिकारियों द्वारा) के आधार पर कुछ विद्वान मानते है कि नेपाल पर भी हर्ष का आधिपत्य था।

9. उड़ीसा:– 640 ई० के आसपास हर्ष ने ओड (उत्तरी उड़ीसा) तथा तत्पश्चात कोणोंडा (दक्षिणी उड़ीसा, गंजाम जिला) और कलिंग पर भी विजय प्राप्त की। इन विजयों के पश्चात हर्ष 'उत्तरी भारत का स्वामी' बन गया और उसने सकलोतरापथनाथ की उपाधि धारण की।